दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

20–21 जनवरी, 2023

''कृष्ण साहित्य : विविध संदर्भ''

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. नीतू परिहार

सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,

हिंदी विभाग,

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Email : hindikrishnasem2023@gmail.com

सम्पर्क सूत्र - 9413864055, 7976284818

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर्मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

भारत एक धर्मप्राण देश है। मानवता अपने आदर्श और औदात्य के साथ यहाँ के अनुकरणीय चरित्रों का साहचर्य प्राप्त कर सुशोभित होती है। राम और कृष्ण मानवता के आगार हैं अतः भारतीय जनमानस के हृदय में पूर्ण आस्था के साथ बिराजे हुए हैं। जहाँ राम अपनी लोकरक्षणकारी प्रवृत्तियों के प्रश्रय में आदर्श और मर्यादा के मानकों को गढ़ते हैं वहीं कृष्ण अपनी लोकानुरंजनकारी छवियों के सापेक्ष विनोद भाव के निमित्त स्वछंद प्रवृत्तियों को अपनाते हुए जीवन को उत्सव की तरह जीने की प्रेरणा देते हैं। हिंदी में विद्यापति और सूरदास से निसृत कृष्ण साहित्य की सरणि में जीवन मूल्यों का अजस्र प्रवाह देखने को मिलता है। सांस्कृतिक-आध्यात्मिक मूल्यों को बिना नकारे जड़ता के प्रतिकार और प्रतिरोध का यह स्वर हर युग में अपनी सार्थकता को व्यक्त करता है। ब्रज की गोचारण सादगी, लीलाओं की सरसता, माधुर्य और वात्सल्य की प्रमुदित करने वाली भावानुभूतियों से साहित्य-रसिकों को कृष्ण चरित्र आकर्षित करता रहा है। यही कारण है कि आदिकाल से लेकर समकालीन हिंदी साहित्य में कृष्ण को केंद्र में रखकर विभिन्न विधाओं में विपुल साहित्य का सर्जन हुआ। ऋग्वेद के अष्टम और दशम मंडल के कुछ सूक्तों के रचयिता कृष्ण नामक ऋषि प्रसिद्ध हुए हैं। कौशीतकी ब्राह्मण और छांदोग्योपनिषद् में कृष्ण को आंगिरस ऋषि का शिष्य बताया गया है। डॉ. भंडारकर और बालगंगाधर तिलक ने वैदिक कृष्ण और महाभारतकालीन कृष्ण को अलग-अलग माना है। विद्वानों ने श्री कृष्ण का समय 1400 ई. पू. माना है और महाभारत में सर्वप्रथम कृष्ण को सामान्य मानव के रूप में वर्णित किया गया। संस्कृत में अश्वघोष कृत ब्रह्मचरित और प्राकृत में कवि हाल कृत गाहा सप्तशती, अपभ्रंश में स्वयंभू कृत हरिवंश पुराण क्रमशः संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में कृष्ण चरित पर लिखी प्रथम रचनाएँ हैं।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में कृष्ण काव्य का प्रारंभ विद्यापति के काव्य से हुआ है। अष्टसखाओं की पुष्टिमार्गीय कृष्ण भक्ति सूरदास के वात्सल्य और शृंगार विभोर स्वर में मुखर होते हुए ब्रज की कुंज-लताओं से आच्छादित वीथियों में गुंजित हुई। कृष्ण प्रेम की दीवानी मीरा और रसखान से आश्रय प्राप्त कर कृष्ण भक्ति की मंदाकिनी देव, घनानंद और पद्माकर के कवित्त-सवैयों से बहती हुई आधुनिक काल में भारतेंदु, रत्नाकर, सत्यनारायण कविरत्न और हरिऔध से लेकर धर्मवीर भारती के अंधायुग तथा कनुप्रिया से होती हुई समकालीन हिंदी साहित्य में अपनी गौरवपूर्ण यात्रा की समृद्ध विरासत के रूप में उपस्थित है। कृष्ण भक्ति व्यापक प्रभाव हिंदी पट्टी से इतर भी बखूबी देखा जा सकता है। दक्षिण के आलवार, बंगाल के महाप्रभु चैतन्य, गुजरात के नरसी मेहता आदि की कृष्ण भक्ति संबंधी रचनाएँ साहित्यिक विभूतियाँ हैं। यह कृष्ण भक्ति का प्रताप ही हैं जो मुगल शासक औरंगजेब की नातिन ताज बेगम नंद के कुमार पर बलिहारी जाती है तो बंगाल में ब्रजबुलि में न्यस्त रचनाएँ व्यवहृत होती हैं।

हिंदी गद्य की विविध विधाओं में कृष्ण आधारित रचनाओं द्वारा लेखकों ने युगीन चिंताओं को तत्कालीन विमर्शों में व्यंजित करने का प्रयास किया है। आधुनिक साहित्य में काव्य के अतिरिक्त नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी आदि कई विधाओं में कृष्ण के विविध स्वरूप की आधुनिक युगबोध एवं नवीन उद्भावना लिए हुए हैं। इस प्रकार हिंदी साहित्य में श्रीकृष्ण को भारतीय चिंतन, दर्शन और विमर्श में स्थान प्रदान कर उन्हें परब्रह्म परमेश्वर मानकर अपनी-अपनी भावानुभूतियों के साथ ग्रहण करते हुए वात्सल्य, सख्य और माधुर्य के आधार पर लौकिक जीवन का अभिन्न अंग माना गया है।

इसमें देश के कई लब्ध प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के आचार्य, साहित्यकार, चिंतक, समालोचक, विषय-विशेषज्ञ, शोधार्थी, विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। संगोष्ठी में आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

संगोष्ठी के विमर्श-बिंदु

- कृष्ण भक्तिकाव्य परंपरा : स्वरूप एवं विकास
- वैदिक परंपरा में कृष्ण का स्वरूप एवं महत्त्व
- विद्यापति का कृष्ण काव्य
- भक्तिकाल में कृष्ण भक्तिस्वरूप
- वल्लभ संप्रदाय के कृष्ण भक्तकवि एवं दर्शन
- कृष्ण भक्तिपरंपरा में अष्टछाप के कवियों का स्थान
- कृष्ण भक्तिपरंपरा और पुष्टिमार्ग
- कृष्ण भक्तिपरंपरा और निम्बार्क संप्रदाय
- कृष्ण भक्तिपरंपरा और राधा वल्लभ संप्रदाय
- कृष्ण भक्तिपरंपरा और हरिदासी संप्रदाय (सखी संप्रदाय)
- कृष्ण भक्तिपरंपरा और चैतन्य (गौड़ीय संप्रदाय)
- सूरदास के काव्य में कृष्ण के विविध रूप
- नंददास के काव्य में कृष्ण
- मीराबाई की कृष्ण भक्ति
- कृष्ण भक्तिसाहित्य और रसखान
- रीतिकाल में कृष्ण भक्तिस्वरूप
- भ्रमरगीत परंपरा एवं हिंदी काव्य
- आधुनिक काल में कृष्ण साहित्य के विविध संदर्भ
- आधुनिक काव्य में कृष्ण साहित्य
- आधुनिक नाट्य परंपरा में कृष्ण का साहित्य एवं स्वरूप
- कथा साहित्य में कृष्ण के विभिन्न स्वरूप एवं संदर्भ
- लोक साहित्य एवं लोकगीतों में कृष्ण छवियाँ
- संगीत परंपरा में कृष्ण के विभिन्न रूप
- भारतीय चित्र शैली में कृष्ण
- श्रीमद्भागवत गीता में व्याप्त योगीश्वर कृष्ण
- आधुनिक संदर्भ में गीता के उपदेश
- भागवत पुराण में कृष्ण का स्वरूप
- कृष्ण का गोपी वल्लभ स्वरूप
- कृष्ण साहित्य से जुड़े अन्य विविध रूप
- अन्य भारतीय भाषाओं में रचित कृष्ण साहित्य

पंजीयन

- पंजीयन शुल्क : शिक्षक एवं अन्य रु. 1200/- शोधार्थी रु. 1000/-, विद्यार्थी - 800/-
- पंजीयन शुल्क विभाग में नकद जमा करवाया जा सकता है अथवा Head, Department of Hindi, M.L.S. University, Udaipur, Raj. के खाते में सीधे ICICI Bank, Branch & MLS University, Udaipur के खाता संख्या 694201437677, IFSC Code & ICIC0006942, MICR 313229007 में भी जमा कराया जा सकता है।

अन्य जानकारियाँ

- पंजीयन एवं शोध पत्र प्रेषण की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर, 2022 है।
- आलेख कृतिदेव-010 फॉण्ट साइज 14 या मंगल यूनिकोड फॉण्ट साइज 12 में टंकित होने चाहिए।
- आलेख Ms Word की फाईल में प्रेषित करें।
- चयनित शोध पत्रों को संपादित पुस्तक ISBN में प्रकाशित किया जाएगा।
- संभागियों को किसी प्रकार का भत्ता देय नहीं होगा।
- संयुक्त शोध पत्र होने पर सभी लेखकों को पृथक-पृथक पंजीयन करवाना होगा।
- संगोष्ठी दिवस पर आपके भोजन की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की जाएगी।
- संभागियों को आवास व्यवस्था अपने स्वयं के स्तर पर करनी होगी।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय

उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (तत्कालीन उदयपुर यूनिवर्सिटी) दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए वर्ष 1962 में एक अधिनियम द्वारा स्थापित एक राज्य पोषित विश्वविद्यालय है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री मोहनलाल सुखाड़िया की स्मृति में सन् 1982 में इस विश्वविद्यालय का नामकरण मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय किया गया। यह विश्वविद्यालय बड़े पैमाने पर आदिवासी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले दक्षिणी राजस्थान में स्थित है। अपनी स्थापना से ही यह विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। उच्च नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक सोच पैदा करने और उच्च शिक्षा के उभरते हुए क्षेत्रों के साथ तालमेल रखने की दिशा में भी विश्वविद्यालय संकल्पवान है। यह विश्वविद्यालय सूचना प्रोद्यौगिकी का शिक्षा, शोध व प्रशासनिक स्तर पर अधिकतम उपयोग करने में अग्रणी है, साथ ही भौतिक आधारभूत सुविधाओं एवं ई-पुस्तकालयों की दृष्टि से भी समृद्ध है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही हिंदी विभाग की स्थापना हुई। हिंदी साहित्य, शोध एवं आलोचना के शीर्ष विद्वानों ने अपनी सेवाएँ इस विभाग में दी है।

संरक्षक मंडल

प्रो. आई.वी.त्रिवेदी
माननीय कुलपति
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

प्रो.सी.आर. सुथार
अधिष्ठाता
वि.सा.वि. एवं मा. महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)

आयोजन सचिव

डॉ. नीतू परिहार
सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि., उदयपुर (राज.)
मो. : 9413864055

आयोजक मंडल

डॉ. नवीन नंदवाना
सह-संयोजक, सह-आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि., उदयपुर (राज.)
मो. : 9828351618

डॉ. आशीष सिसोदिया
सह-संयोजक, सह-आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि., उदयपुर (राज.)
मो. : 9414851055

डॉ. नीता त्रिवेदी
सह-संयोजक, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मो.सु.वि.वि., उदयपुर (राज.)
मो. : 9950960999